

वर्ष 10, अंक 34, जनवरी - मार्च 2020 I.S.S.N.-2320-3455

राष्ट्रसेतु RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

राष्ट्रसेतु RASHTRASETU

(भाषा समन्वय एवं भारतीय साहित्य की पुरस्कृत विश्वविद्यालयीन शोध पत्रिका)
Peer Reviewed / Refereed Research Journal in Hindi

वर्ष - 10

■ जनवरी - मार्च 2020

अंक-34

प्रधान सम्पादक, संस्थापक एवं प्रकाशक

जगदीश यादव

एम.आई.जी.-14, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी

कचना/पो.आ.-सड्डू, रायपुर (छ.ग.) - 492014

Mob.: 7024888771

सम्पादक द्वय

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

मो.: 9895811679

डॉ. गिरिजाशंकर गौतम

मो.: 9424229233

संरक्षक एवं सलाहकार मंडल

- ◆ डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी, बेंगलूर
- ◆ डॉ. श्रीमती मृदुला शुक्ल, खैरागढ़
- ◆ डॉ. आर. एम. श्रीनिवासन, चेन्नई
- ◆ डॉ. आरसु, कालिकट (केरल)
- ◆ ताराचन्द पंड्या 'श्याम', रायपुर
- ◆ आचार्य नर्मदा प्रसाद मिश्र 'नरम' रायपुर

Computer Operator Mob.: 9827980289, Email : printingpressshiv@gmail.com

● Bank Account : jagdish singh yadav A/c. No. 63045195895, State Bank of India, Motibagh Raipur, (C.G.) / IFSC Code : SBIN 0030443

- प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी जगदीश यादव द्वारा हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, कचना, रायपुर से प्रकाशित एवं गुप्ता प्रिन्टर्स, समता कॉलोनी, रायपुर द्वारा मुद्रित ।
- किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित ।
- सभी पद, सेवा, लेखन अवैतनिक एवं मानदेय रहित ।
- न्याय का क्षेत्र रायपुर (छ.ग.) ।
- राष्ट्रसेतु में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/शोधार्थियों के अपने हैं, पत्रिका भी उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं ।

उद्देश्यपूर्ण वितरण हेतु प्रकाशित अमूल्य शोध पत्रिका

अनुक्रम

■ साहित्य / शोध :

- | | |
|--|-------|
| ■ एक और पंचवटी उपन्यास में अंतर्द्वंद्व / जीवंतिका ठाकुर | 1-4 |
| ■ नशाखोरी की समस्या आज समाज के लिए चुनौती : पत्ताखोर के विशेष संदर्भ में / धन्या पी.पी. | 5-7 |
| ■ सिर्फ शहर में ही नहीं, जंगल में भी हैं मानव जीवन : नीलोफर उपन्यास के विशेष संदर्भ में / अम्बिलि मनोहरन | 8-10 |
| ■ प्रवासी जीवन-चित्रण फिल्मों में / डॉ. शशिकला ए.बी. | 11-13 |
| ■ तीसरा लिंग : एक विचार विमर्श / डॉ. श्रीजा पी.वी. | 14-16 |
| ■ समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी जीवन / अनीसा बेगम | 17-19 |
| ■ मिस रमिया, नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में / सुनन्दा ए. एम | 20-23 |
| ■ ब्रम्हराक्षस-मध्यवर्ग के त्रासद जीवन की अन्तर्कथा / सुब्रामणियम वी.के. | 24-27 |
| ■ मैं भी औरत हूँ : उम्मीद की नयी दास्तान / बिजी नायर सी.वी | 28-30 |
| ■ आधुनातन प्रौद्योगिकी और इक्कीसवीं सदी की कविता / डॉ. हेरमन पी.जे. | 31-34 |
| ■ चक्रव्यूह उपन्यास में शैक्षिक समस्याएँ / लक्ष्मी प्रिया ई. | 35 |
| ■ राजेन्द्र केडिया कृत "अमलकांटा" / ताराचन्द पण्ड्या श्याम | 36-38 |

शोधपत्र प्रकाशन हेतु संपर्क कीजिये

प्रिय शोधार्थियों राष्ट्रसेतु भारतीय-साहित्य एवं भाषा समन्वय की एक मात्र विश्वविद्यालयीन शोधपत्रिका है। यह बहुभाषी और समस्त शैक्षिक विषयक भी है। ISSN द्वारा रजिस्टर्ड इस त्रैमासिक पत्रिका में अपने शोधपत्र/शोध आलेख प्रकाशित करवाकर विश्वविद्यालय की योजनाओं एवं सेवा नियमों का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

ब्रह्मराक्षस-मध्यवर्ग के त्रासद जीवन की अन्तर्कथा

■ शोधार्थी : सुब्रामणियम वी.के.

अगर हमें कुछ कहना है तो मुक्तिबोध की तरह कहना चाहिए। जब मुक्तिबोध कहने लगते हैं, तब हमारी अपनी बातें जो हमसे अपरिचित हैं, हमें मालूम होने लगती हैं। मुक्तिबोध एक बड़े दार्शनिक कवि के रूप में हिंदी काव्यक्षेत्र में अवतरित हुए हैं। अतः मुक्तिबोध की कविता को समझने के लिए हमें ध्यान से पढ़ना चाहिए। उनकी कविताएँ हमारे ध्यान को उस सत्य की ओर ले जाती हैं, जो हमारे लिए प्रत्यक्ष नहीं हैं। "किसी रोगग्रस्त समाज का उपचार करने के लिए जिस प्रकार कोई डॉक्टर बीमारी के जहरीले कीटाणुओं को अपने शरीर में प्रविष्ट कराके उनके प्रभाव का अध्ययन करते हुए, तदुपरांत रोग की सच्ची वास्तविकता को स्पष्ट कर, प्राण देकर भी उस समाज का उपचार करता है, मुक्तिबोध ने युग की सारी विषमता, सारे पीड़न, सारे तनाव, सारे जहर को अपने भीतर समेटकर अपने प्राण देकर भी अपने अनुभवों तथा निष्कर्षों से आज के रोगग्रस्त समाज तथा उसके भीतर पालनेवाले सृजन को उपचार का सही रास्ता सुझाया है।"

एक ही बार कहने से सत्य कभी खुलता नहीं है, सत्य को प्रकाशित करने के लिए हमें एक ही बात बार-बार कहना पड़ता है। अतः मुक्तिबोध की कविता में एक ही बात कई बार कही गयी है, और एक ही बात कई बातों की ओर इशारा करने के लिए ही कही गयी है। कई बातों

की ओर इशारा करने की क्षमता ही मुक्तिबोध की कविता की सृजनात्मक खासियत है। उनकी कविताएँ चिंतन-मनन के लिए प्रेरित करती हैं, याने चिंतन-मनन का रास्ता वे प्रशस्त कर देती हैं।

मुक्तिबोध की कविता पढ़कर कोई मौन नहीं रह सकता। उनकी कविता में आधुनिक मनुष्य की गहन मौन को आवाज में परिवर्तित करने की भाषाई महाशक्ति का तांडव रहता है। "मुक्तिबोध की कविता में भाषा का जो बाहुल्य है वह ताण्डव करती उनकी कविता को संतुलित करने के लिए निनाद रूप में है। हम इस ताण्डव को इसी भाषा निनाद के ही कारण समग्र रूप में देख पाते हैं वरना शुद्ध ताण्डव से साक्षात् सम्भव ही नहीं। बजती हुई, चीत्कार करती हुई, अटूटहास करती हुई उनकी यह भाषा ही उनके काव्य के अमूर्त ताण्डव की प्रतीति कराती है।" दरअसल उनकी कविता से उत्भूत अपार ऊर्जा हमें काफी आन्दोलित करती है और मन में आन्दोलन को पैदा करने की काबीलियत मुक्तिबोध की कविताओं में कूट-कूटकर भरी हुई है। उन्होंने कई कविताएँ लिखी हैं, जिनमें काफी चर्चित एक कविता है 'ब्रह्मराक्षस'।

'ब्रह्मराक्षस' इस कवि की ओर से मिली बड़ी सृजनात्मक उपलब्धि है। इसमें कवि का दूरदृष्ट रचनाकार व्यक्तित्व उभर आया है। जो जीवन यथार्थ हम अपनी दोनों आँखों से नहीं देख

पा रहे हैं, उन्हें वे देख रहे हैं। कवि की दृष्टि में साधारण मनुष्य के जीवन की समस्याओं को अतल तक जाकर देखने की ताकत रहती है। इस उक्ति का इस्तेमाल मुक्तिबोध के रचनाकार व्यक्तित्व ने पूर्णतः उपयोग किया है। साथ ही कवियों को भी शिक्षा देने की शक्ति भी रहती है- "मुक्तिबोध की कविता असुरक्षित जीवन की कविता है। उसमें भावबोध की अस्थिरता और विचारों की उलझनें भी हैं। लेकिन यह सब किस में नहीं है? इसलिए भी उनकी कविता में सीखने और समझने के लिए बहुत कुछ है - खासकर कवियों के लिए"। मुक्तिबोध अपने अपूर्व ज्ञान दृष्टि से काव्यवस्तु को दृढ़ते हैं। साधारण पाठकों के लिए उनकी दृष्टि समझ के बाहर हो सकती है। क्योंकि जीवन के वास्तविक व्यवहार पाठकों की समझ की परिधि के बाहर रहते हैं। अतः उनकी कविता को सही माइने में पढ़ पाना प्रयत्न साध्य है।

'ब्रह्मराक्षस' हिंदी कविता के इतिहास में अति अपूर्व काव्य सृजन है। सृजन की शक्ति की बारीकियों का इस्तेमाल इसमें किया गया है। अक्सर कविता में काव्य-वस्तु की बारीकियों का भी समावेशन साधारण बात नहीं है। यह प्रतिभावान कवि के वश की बात है। इस कविता में फान्टसी का उपयोग काव्य वस्तु के संप्रेषण के लिए किया गया है। पर फान्टसी काव्य की वस्तु के संप्रेषण